पाठ 12. जीवन और शिक्षण

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में विवेचनात्मक सोच संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे अपने अनुभवों का सकारात्मक मूल्यांकन कर सकें। विनोबा भावे द्वारा लिखित यह निबंध जीवन और शिक्षण के आदर्शों को प्रस्तुत करता है। किताबी ज्ञान और वास्तविक जीवन के लिए अनुभवों से अर्जित ज्ञान में अंतर बताने वाला यह पाठ शिक्षा के उद्देश्य की ओर इशारा करता है।

पाठ का सार

लेखक बताते हैं कि जो कुछ भी व्यक्ति किताबों से सीखता है, वह संपूर्ण ज्ञान सच्चाई की दुनिया से अलग होता है। कोई भी व्यक्ति एकदम से सारी ज़िम्मेदारियाँ नहीं उठा सकता। यह एक प्रक्रिया के तहत हो तभी सफलता मिल सकती है। कृष्ण जी ने कुरुक्षेत्र में ही भगवद्गीता कही तभी अर्जुन उसका सार समझ पाए। युवावस्था में लोग तरह-तरह के सपने देखते हैं परंतु घर-गृहस्थी का भार आते ही सब चकनाचूर हो जाते हैं। लेखक कहते हैं कि जीवन और मरण–दोनों आनंद की वस्तु होनी चाहिए। जितना भी हो सके, अपना तथा दूसरों का जीवन सुखमय बनाओ। प्रत्येक नागरिक को अपनी ज़िम्मेदारी समझनी चाहिए तथा उसी रीति के अनुसार कार्य करना चाहिए। देखा जाए तो जीवन-ज्ञान ठोकरें खाने के बाद ही प्राप्त होता है न कि किताबें पढ़कर।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  बच्चों से कुछ ऐसे प्रश्न करें जिनमें यह पूछा जाए कि उन्हें जो शिक्षा मिल रही है, उसके सहारे उनमें किस तरह के कौशल विकसित हो रहे हैं, उन्हें किन जगहों पर लग रहा है कि अमुक विषय उनके जीवन में किसी काम नहीं आने वाला है। फिर उनके मन में आने वाली शंकाओं का निराकरण करें। इसके बाद पाठ के संबंध में संक्षिप्त चर्चा करें। बच्चों से विभिन्न अंशों में पाठ का मुखर वाचन करवाएँ। फिर उन्हें कहें कि वे इस पाठ को मन-ही-मन शांत भाव से पढ़ें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 40** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - बच्चों को बताएँ कि क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं। क्रियाविशेषणों के भेद व्याकरणिक भाषा में बताने की बजाय कुछ वाक्यों के प्रयोग द्वारा समझाया जाना अधिक उपयोगी है।
  - विलोम शब्दों का विकल्प चुनते समय विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है, जैसे- 'स्वाधीन' का उपयुक्त विलोम 'पराधीन' होता है, न कि 'गुलाम'। इस ओर उनका ध्यान अवश्य आकृष्ट करें।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - कविता, दोहा, आदि के रूप में स्लोगन लेखन में बच्चों का मार्गदर्शन करें।
  - 'संसार की रचना ईश्वर ने की है।'–इस विषय पर बिना किसी धार्मिक आस्था या पूर्वाग्रह के वाद-विवाद हो, यह सुनिश्चित करें। डार्विन के सिद्धांत की चर्चा अवश्य करें।